श्रीहरिः

विषय-सूची

विषय

१–श्रीरामसे भरतजीकी भेंट ...
२–सीताहरण ... ...
३–सुग्रीवसे मित्रता ... ...
४–लंका-दहन ... ...
५–रावण-वध ... ...
६–राम-राज्य ... ...
७–अवतार-लीलाकी समाप्ति ...
अपनी परीक्षा कीजिये ...

चित्र-सूची

१–राजा राम (रंगीन)
२–भरतजीको रामजीने पादुका दे दी (सादा)
३–रावण जटायुको मार रहा है (,,)
४–वालिपर रामजी बाण छोड़ रहे हैं (,,)
५–हनूमानजी लंका जला रहे हैं (,,)
६–रामजी रावणको मार रहे हैं (,,)
७–रामजीका राजतिलक हो रहा है (,,)
८–रामदरबारमें लव-कुश रामायण गा रहे हैं (,,)

श्रीहरिः

विषय-सूची

विषय

१—श्रीरामसे भरतजीकी भेंट ...
२—सीताहरण ... ...
३—सुग्रीवसे मित्रता ... ...
४—लंका-दहन ... ...
५—रावण-वध ... ...
६—राम-राज्य ... ...
७—अवतार-लीलाकी समाप्ति ...
अपनी परीक्षा कीजिये ...

चित्र-सूची

१—राजा राम (रंगीन)
२—भरतजीको रामजीने पादुका दे दी (सादा)
३—रावण जटायुको मार रहा है (,,)
४—वालिपर रामजी बाण छोड़ रहे हैं (,,)
५—हनूमानजी लंका जला रहे हैं (,,)
६—रामजी रावणको मार रहे हैं (,,)
७—रामजीका राजतिलक हो रहा है (,,)
८—रामदरबारमें लव-कुश रामायण गा रहे हैं (,,)

राजा राम

राजा राम

महाराज दशरथके शरीरको तेलमें डुबोकर रखवा दिया और भरतजीको बुलानेके लिये दूत उनके ननिहाल कैकयदेश भेज दिये ।

'गुरुदेवने बुलवाया है,' दूतोंसे यह संदेश सुनकर भरतजी तुरंत ननिहालसे चलकर अयोध्या आये । दूतोंने उन्हें कोई समाचार नहीं दिया था, किंतु नगरकी सुनसान दशा देखकर उन्हें बड़ी आशङ्का हुई । केवल महारानी कैकेयीने ही उनका स्वागत किया । बड़े उत्साहसे कैकेयीने अपनी सारी करतूत भरतजीको सुनायी । पिताके परलोकवासका समाचार सुनकर भरतजी अत्यन्त व्याकुल हो गये । जब श्रीरामके वन जानेकी बात उन्होंने सुनी, तब तो उनके दुःखकी सीमा ही नहीं रही । उन्होंने अपनी माता कैकेयीको बहुत धिक्कारा । शत्रुघ्नजीने दासी मन्थराको एक लात लगायी और उसकी चोटी पकड़कर वे घसीटने लगे । वे उसे

महाराज दशरथके शरीरको तेलमें डुबोकर रख दिया और भरतजीको बुलानेके लिये दूत उनके ननिहाल कैकयदेश भेज दिये।

'गुरुदेवने बुलवाया है,' दूतोंसे यह संदेश सुनकर भरतजी तुरंत ननिहालसे चलकर अयोध्या आये। दूतोंने उन्हें कोई समाचार नहीं दिया था, किंतु नगरकी सुनसान दशा देखकर उन्हें बड़ी आशङ्का हुई। केवल महारानी कैकेयीने ही उनका स्वागत किया। बड़े उत्साहसे कैकेयीने अपनी सारी करतूत भरतजीको सुनायी। पिताके परलोकवासका समाचार सुनकर भरतजी अत्यन्त व्याकुल हो गये। जब श्रीरामके वन जानेकी बात उन्होंने सुनी, तब तो उनके दुःखकी सीमा ही नहीं रही। उन्होंने अपनी माता कैकेयीको बहुत धिक्कारा। शत्रुघ्नजीने दासी मन्थराको एक लात लगायी और उसकी चोटी पकड़कर वे घसीटने लगे। वे उसे

कौसल्या तथा राजसभाके सभी सभासदोंने भरतजीसे कहा—'महाराज दशरथने आपको राज्य दिया है। जबतक श्रीराम लौटकर न आवें, तबतक तो आपको अवश्य प्रजाका पालन करना ही चाहिये!'

श्रीभरतजीने बड़ी नम्रतासे सबसे प्रार्थना करते हुए स्पष्टरूपसे राज्य लेना अस्वीकार कर दिया। उन्होंने श्रीरामके पास वनमें जाने तथा उन्हें मना लानेकी इच्छा प्रकट की। इस बातसे सभीको बहुत प्रसन्नता हुई। श्रीरामका वनमें ही राज्याभिषेक कर देनेका विचार पक्का हो गया। राज्याभिषेककी सब सामग्री साथ ले ली गयी। नगरमें केवल रक्षाके लिये कुछ लोग रह गये, बाकी सब भरतजीके साथ श्रीरामके दर्शन करने वनको चल पड़े।

श्रीभरतजीके साथ बहुत अधिक लोग थे। हाथी, घोड़े, रथ भी बहुत थे। भरतजी जब शृंगबेरपुरके पास पहुँचे, तब निषादराज गुहको संदेह

कौसल्या तथा राजसभाके सभी सभासदोंने भरतजीसे कहा—'महाराज दशरथने आपको राज्य दिया है। जबतक श्रीराम लौटकर न आवें, तबतक तो आपको अवश्य प्रजाका पालन करना ही चाहिये!'

श्रीभरतजीने बड़ी नम्रतासे सबसे प्रार्थना करते हुए स्पष्टरूपसे राज्य लेना अस्वीकार कर दिया। उन्होंने श्रीरामके पास वनमें जाने तथा उन्हें मना लानेकी इच्छा प्रकट की। इस बातसे सभीको बहुत प्रसन्नता हुई। श्रीरामका वनमें ही राज्याभिषेक कर देनेका विचार पक्का हो गया। राज्याभिषेककी सब सामग्री साथ ले ली गयी। नगरमें केवल रक्षाके लिये कुछ लोग रह गये, बाकी सब भरतजीके साथ श्रीरामके दर्शन करने वनको चल पड़े।

श्रीभरतजीके साथ बहुत अधिक लोग थे। हाथी, घोड़े, रथ भी बहुत थे। भरतजी जब शृंगवेरपुरके पास पहुँचे, तब निषादराज गुहको संदेह

महाराज दशरथके परलोकवासका समाचार जनकपुर भी पहुँच गया था। महाराज जनकने दूत भेजकर अयोध्याका समाचार मँगाया और भरतजीके चित्रकूट जानेकी बात सुनकर वे भी अपने परिवार, मन्त्री तथा सेवकोंके साथ चित्रकूट आये। चित्रकूटमें अयोध्या और मिथिलाके सभी लोग पड़ाव डालकर कई दिनोंतक रुके रहे। श्रीरामने सबका यथोचित सम्मान-सत्कार किया। महर्षि वशिष्ठ, महाराज जनक तथा सभी लोग चाहते थे कि श्रीराम अयोध्या लौट चलें। लेकिन धर्मात्मा लोग किसीको सत्य तथा धर्मके नियम छोड़नेका हठ नहीं करते। सबने श्रीरामपर ही निर्णयका भार छोड़ दिया। श्रीरामने भरतजीको समझाया कि पिताजीकी आज्ञाका पालन सभीको करना चाहिये। अन्तमें भरतजीने यह स्वीकार कर लिया कि 'आप अपना कोई चिह्न प्रतिनिधिरूपसे दे देंगे तो मैं अयोध्या लौट जाऊँगा।' श्रीरामने अपनी खड़ाऊँ दे दी और

महाराज दशरथके परलोकवासका समाचार जनकपुर भी पहुँच गया था। महाराज जनकने दूत भेजकर अयोध्याका समाचार मँगाया और भरतजीके चित्रकूट जानेकी बात सुनकर वे भी अपने परिवार, मन्त्री तथा सेवकोंके साथ चित्रकूट आये। चित्रकूटमें अयोध्या और मिथिलाके सभी लोग पड़ाव डालकर कई दिनोंतक रुके रहे। श्रीरामने सबका यथोचित सम्मान-सत्कार किया। महर्षि वशिष्ठ, महाराज जनक तथा सभी लोग चाहते थे कि श्रीराम अयोध्या लौट चलें। लेकिन धर्मात्मा लोग किसीको सत्य तथा धर्मके नियम छोड़नेका हठ नहीं करते। सबने श्रीरामपर ही निर्णयका भार छोड़ दिया। श्रीरामने भरतजीको समझाया कि पिताजीकी आज्ञाका पालन सभीको करना चाहिये। अन्तमें भरतजीने यह स्वीकार कर लिया कि 'आप अपना कोई चिह्न प्रतिनिधिरूपसे दे देंगे तो मैं अयोध्या लौट जाऊँगा।' श्रीरामने अपनी खड़ाऊँ दे दी और

सीता-हरण

भगवान श्रीरामने सोचा कि चित्रकूटमें रहं
अयोध्याके लोग बारबार यहाँ आते रहेंगे । इस
वे महर्षि अत्रिके आश्रममें गये और उनसे आः
लेकर वनके मार्गसे दक्षिणकी ओर चल पड़े
मार्गमें विराध नामके असुरको उन्होंने मारा
शरभंग तथा सुतीक्ष्ण मुनिके आश्रमोंपर होते हु
वे दंडकारण्यमें ऋषिश्रेष्ठ अगस्त्यजीके आश्रमप
पहुँचे । अगस्त्यजीकी अनुमतिसे श्रीरामने पंचवटीं
फूसकी कुटियामें लक्ष्मण तथा सीताजीके साथ
निवास किया ।

सीता-हरण

भगवान श्रीरामने सोचा कि चित्रकूटमें रहनेसे अयोध्याके लोग बारबार यहाँ आते रहेंगे। इससे वे महर्षि अत्रिके आश्रममें गये और उनसे आज्ञा लेकर वनके मार्गसे दक्षिणकी ओर चल पड़े। मार्गमें विराध नामके असुरको उन्होंने मारा। शरभंग तथा सुतीक्ष्ण मुनिके आश्रमोंपर होते हुए वे दंडकारण्यमें ऋषिश्रेष्ठ अगस्त्यजीके आश्रमपर पहुँचे। अगस्त्यजीकी अनुमतिसे श्रीरामने पंचवटीमें फूसकी कुटियामें लक्ष्मण तथा सीताजीके साथ निवास किया।

लेकर युद्ध करने दौड़ पड़े। राक्षसोंकी बड़ी भारी सेना देखकर श्रीसीताजीको श्रीरामने एक गुफामें भेज दिया और लक्ष्मणजीको उनकी रक्षाके लिये रख दिया तथा स्वयं राक्षसोंसे युद्ध करने खड़े हो गये। बड़ा भयानक युद्ध हुआ। थोड़ी ही देरमें श्रीरामने खर, दूषण, त्रिशिरा तथा उनकी सारी सेनाको समाप्त कर दिया।

खर-दूषणके मारे जानेपर शूर्पणखा लंकामें रावणके पास गयी। रावणने शूर्पणखाकी सब बातें सुनीं। राक्षस रावण बड़ा विद्वान् था। उसने समझ लिया कि खर-दूषण-जैसे बलवान राक्षसोंको कोई साधारण मनुष्य नहीं मार सकता। अवश्य भगवानने अवतार लिया है। भगवानके हाथसे मरनेसे भी मोक्ष प्राप्त होता है, यह सोचकर रावणने श्रीरामसे शत्रुता करनेका निश्चय किया। महर्षि विश्वामित्रकी यज्ञरक्षाके समय श्रीरामने बिना नोकका बाण मारकर मारीच राक्षसको

लेकर युद्ध करने दौड़ पड़े । राक्षसोंकी बड़ी भारी सेना देखकर श्रीसीताजीको श्रीरामने एक गुफामें भेज दिया और लक्ष्मणजीको उनकी रक्षाके लिये रख दिया तथा स्वयं राक्षसोंसे युद्ध करने खड़े हो गये । बड़ा भयानक युद्ध हुआ । थोड़ी ही देरमें श्रीरामने खर, दूषण, त्रिशिरा तथा उनकी सारी सेनाको समाप्त कर दिया ।

खर-दूषणके मारे जानेपर शूर्पणखा लंकामें रावणके पास गयी । रावणने शूर्पणखाकी सब बातें सुनीं । राक्षस रावण बड़ा विद्वान् था । उसने समझ लिया कि खर-दूषण-जैसे बलवान राक्षसोंको कोई साधारण मनुष्य नहीं मार सकता । अवश्य भगवानने अवतार लिया है । भगवानके हाथसे मरनेसे भी मोक्ष प्राप्त होता है, यह सोचकर रावणने श्रीरामसे शत्रुता करनेका निश्चय किया । महर्षि विश्वामित्रकी यज्ञरक्षाके समय श्रीरामने बिना नोकका बाण मारकर मारीच राक्षसको

इतना सुन्दर हिरन देखकर श्रीरामसे कहा कि 'आप इसे मारकर इसका चर्म मुझे ला दीजिये ।' श्रीरामने धनुष चढ़ाया और वे मृग बने मारीचके पीछे दौड़ पड़े । मारीच बड़ी दूरतक दौड़ता चला गया । बहुत दूर जाकर श्रीरामने उसपर बाण छोड़ा । बाण लगनेपर मारीचने मृगरूप छोड़ दिया और अपने रूपमें प्रकट होकर मरते-मरते छलसे उसने जोरसे लक्ष्मणजीको नाम लेकर पुकारा ।

श्रीसीताजीने दूरसे मारीचका पुकारना सुना तो समझा कि श्रीराम किसी संकटमें हैं और लक्ष्मण-जीको पुकार रहे हैं । उन्होंने लक्ष्मणजीको बड़े भाईके पास जानेको कहा । श्रीलक्ष्मणजी सीताजीको अकेली छोड़कर नहीं जाना चाहते थे, किंतु जब सीताजीने बहुत हठ किया तो मन्त्र पढ़कर सीताजीके चारों ओर रेखा खींचकर वे श्रीरामके पास चले गये ।

रावण छिपा हुआ सब देख रहा था । लक्ष्मणजीके चले जानेपर वह एक साधुके वेशमें आया ।

इतना सुन्दर हिरन देखकर श्रीरामसे कहा कि 'आप इसे मारकर इसका चर्म मुझे ला दीजिये ।' श्रीरामने धनुष चढ़ाया और वे मृग बने मारीचके पीछे दौड़ पड़े । मारीच बड़ी दूरतक दौड़ता चला गया । बहुत दूर जाकर श्रीरामने उसपर बाण छोड़ा । बाण लगनेपर मारीचने मृगरूप छोड़ दिया और अपने रूपमें प्रकट होकर मरते-मरते छलसे उसने जोरसे लक्ष्मणजीको नाम लेकर पुकारा ।

श्रीसीताजीने दूरसे मारीचका पुकारना सुना तो समझा कि श्रीराम किसी संकटमें हैं और लक्ष्मण-जीको पुकार रहे हैं । उन्होंने लक्ष्मणजीको बड़े भाईके पास जानेको कहा । श्रीलक्ष्मणजी सीताजीको अकेली छोड़कर नहीं जाना चाहते थे, किंतु जब सीताजीने बहुत हठ किया तो मन्त्र पढ़कर सीताजीके चारों ओर रेखा खींचकर वे श्रीरामके पास चले गये।

रावण छिपा हुआ सब देख रहा था । लक्ष्मणजीके चले जानेपर वह एक साधुके वेशमें आया ।

रा० भाग २] रावण जटायुको मार रहा है [पृष्ठ १९

रावण जटायुको मार रहा है

रक्षाके लिये बहुत-सी राक्षसियाँ नियुक्त कर दीं।

बहुरि राम अस मन अनुमाना। होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना॥
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई। सीता सहित चले द्वौ भाई॥
पुनि प्रभु पंचवटीं कृत बासा। भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा॥
सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी॥

लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि॥

खर दूषन पहिं गइ बिलपाता। धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता॥
तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई। जातुधान सुनि सेन बनाई॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा। बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा॥

राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान।
करि उपाय रिपु मारे छन महुँ कृपानिधान॥

धुआँ देखि खर दूषन केरा। जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा।
खर दूषन तिसिरा कर घाता। सुनि दससीस जरे सब गाता॥
सून बीच दसकंधर देखा। आवा निकट जती कें बेषा॥

क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ।
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ॥

गीधराज सुनि आरत बानी। रघुकुल तिलक नारि पहिचानी॥
धावा क्रोधवंत खग कैसें। छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें॥
काटेसि पंख परा खग धरनी। सुमिरि राम करि अद्भुत करनी॥
एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ। बन असोक महँ राखत भयऊ॥

रक्षाके लिये बहुत-सी राक्षसियाँ नियुक्त कर दीं।

बहुरि राम अस मन अनुमाना । होइहि भीर सबहिं मोहिं जाना ॥
सकल मुनिन्ह सन बिदा कराई । सीता सहित चले द्वौ भाई ॥
पुनि प्रभु पंचवटीं कृत बासा । भंजी सकल मुनिन्ह की त्रासा ॥
सूपनखा रावन कै बहिनी । दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ॥

लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिनु कीन्हि ।
ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि ॥

खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । धिग धिग तव पौरुष बल भ्राता ॥
तेहिं पूछा सब कहेसि बुझाई । जातुधान सुनि सेन बनाई ॥
देखि राम रिपुदल चलि आवा । बिहसि कठिन कोदंड चढ़ावा ॥

राम राम कहि तनु तजहिं पावहिं पद निर्बान ।
करि उपाय रिपु मारे छन महुँ कृपानिधान ॥

धुआँ देखि खर दूषन केरा । जाइ सुपनखाँ रावन प्रेरा ॥
खर दूषन तिसिरा कर घाता । सुनि दससीस जरे सब गाता ॥
सून बीच दसकंधर देखा । आवा निकट जती कें बेषा ॥

क्रोधवंत तब रावन लीन्हिसि रथ बैठाइ ।
चला गगनपथ आतुर भयँ रथ हाँकि न जाइ ॥

गीधराज सुनि आरत बानी । रघुकुल तिलक नारि पहिचानी ॥
धावा क्रोधवंत खग कैसें । छूटइ पबि परबत कहुँ जैसें ॥
काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरि राम करि अद्भुत करनी ॥
एहि बिधि सीतहि सो लै गयऊ । बन असोक महँ राखत भयऊ ॥

भगवानकी बड़ी भक्त थी। मतंग ऋषिने उससे कहा था कि भगवान श्रीराम स्वयं तुम्हारे यहाँ आयेंगे। वह तभीसे नित्य रास्तेमें झाड़ू देती और वनसे मीठे-मीठे फल लाकर भगवानके लिये रखती। इस प्रकार बहुत दिनोंसे वह भगवानकी बाट देख रही थी। वहाँ और भी दूसरे ऋषि-मुनियोंके आश्रम थे। श्रीराम तो केवल भक्तिको ही आदर देनेवाले हैं। सीताजीको ढूँढ़ते हुए वे जब वहाँ पहुँचे तो ऋषि-मुनियोंके यहाँ न जाकर सीधे शबरीजीकी कुटी-पर गये। शबरीने बड़े प्रेमसे श्रीराम-लक्ष्मणका स्वागत किया। श्रीरामने भी उनके दिये हुए फल बड़ी रुचिसे खाये और उनको भक्तिका वरदान दिया।

किष्किन्धापुरीमें बालि वानरोंके राजा थे। सुग्रीव उनके छोटे भाई थे। पहले दोनों भाइयोंमें बड़ी मित्रता थी। एक बार एक राक्षसने बालिको युद्धके लिये ललकारा। बालि जब उससे लड़ने दौड़ा तब वह भागकर एक गुफामें छिप गया।

भगवानकी बड़ी भक्त थी। मतंग ऋषिने उससे कहा था कि भगवान श्रीराम स्वयं तुम्हारे यहाँ आयेंगे। वह तभीसे नित्य रास्तेमें झाड़ू देती और वनसे मीठे-मीठे फल लाकर भगवानके लिये रखती। इस प्रकार बहुत दिनोंसे वह भगवानकी बाट देख रही थी। वहाँ और भी दूसरे ऋषि-मुनियोंके आश्रम थे। श्रीराम तो केवल भक्तिको ही आदर देनेवाले हैं। सीताजीको ढूँढ़ते हुए वे जब वहाँ पहुँचे तो ऋषि-मुनियोंके यहाँ न जाकर सीधे शबरीजीकी कुटी-पर गये। शबरीने बड़े प्रेमसे श्रीराम-लक्ष्मणका स्वागत किया। श्रीरामने भी उनके दिये हुए फल बड़ी रुचिसे खाये और उनको भक्तिका वरदान दिया।

किष्किन्धापुरीमें बालि वानरोंके राजा थे। सुग्रीव उनके छोटे भाई थे। पहले दोनों भाइयोंमें बड़ी मित्रता थी। एक बार एक राक्षसने बालिको युद्धके लिये ललकारा। बालि जब उससे लड़ने दौड़ा तब वह भागकर एक गुफामें छिप गया।

ऋष्यमूक पर्वतपर पहुँच गये। इस पर्वतपर पहले एक ऋषि रहते थे। बालिने ऋषिके आश्रमके पास एक राक्षसको मारा था। राक्षसके रक्तके छींटे ऋषिके ऊपर पड़ गये। इससे ऋषिने शाप दे दिया था कि बालि फिर इस पर्वतपर आयेगा तो मर जायगा। इससे बालि उस पर्वतपर नहीं जाता था। सुग्रीवके विश्वासपात्र मन्त्री श्रीहनुमानजी तथा कुछ और लोग भी सुग्रीवके साथ वहाँ रहते थे।

शबरीजीके आश्रमसे आगे चलकर श्रीराम-लक्ष्मण पंपा सरोवरपर होकर जब ऋष्यमूक पर्वतके पास पहुँचे, तब दूरसे ही उन्हें देखकर सुग्रीवको संदेह हुआ कि कहीं बालिने मुझे मारनेके लिये तो इन्हें नहीं भेजा है। सुग्रीवने हनुमानजीको पता लगानेके लिये भेजा। श्रीहनुमानजीसे श्रीरामका यहीं परिचय हुआ। हनुमानजी श्रीराम-लक्ष्मणको पर्वतपर ले गये और श्रीरामने अग्निको साक्षी करके सुग्रीवसे मित्रता की। श्रीसीताजीको जब रावण आकाशसे

ऋष्यमूक पर्वतपर पहुँच गये। इस पर्वतपर पहले एक ऋषि रहते थे। बालिने ऋषिके आश्रमके पास एक राक्षसको मारा था। राक्षसके रक्तके छींटे ऋषिके ऊपर पड़ गये। इससे ऋषिने शाप दे दिया था कि बालि फिर इस पर्वतपर आयेगा तो मर जायगा। इससे बालि उस पर्वतपर नहीं जाता था। सुग्रीवके विश्वासपात्र मन्त्री श्रीहनुमानजी तथा कुछ और लोग भी सुग्रीवके साथ वहाँ रहते थे।

शबरीजीके आश्रमसे आगे चलकर श्रीराम-लक्ष्मण पंपा सरोवरपर होकर जब ऋष्यमूक पर्वतके पास पहुँचे, तब दूरसे ही उन्हें देखकर सुग्रीवको संदेह हुआ कि कहीं बालिने मुझे मारनेके लिये तो इन्हें नहीं भेजा है। सुग्रीवने हनुमानजीको पता लगानेके लिये भेजा। श्रीहनुमानजीसे श्रीरामका यहीं परिचय हुआ। हनुमानजी श्रीराम-लक्ष्मणको पर्वतपर ले गये और श्रीरामने अग्निको साक्षी करके सुग्रीवसे मित्रता की। श्रीसीताजीको जब रावण आकाशसे

सुग्रीवके आदेशसे हनुमानजीने दूर-दूरके पर्वतों एवं वनोंमें रहनेवाले वानरोंको एकत्र किया। सब किष्किन्धा आये और सुग्रीव तथा लक्ष्मणजीके साथ श्रीरामजीके पास आये।

श्रीरामके आदेशसे सुग्रीवने वानरोंके चार दल बनाकर चारों दिशाओंमें सीताजीकी खोज करनेको भेज दिया। दक्षिणकी ओर श्रीअंगदजी, जाम्बवंत और हनुमानजी आदि गये। भगवान श्रीरामने हनुमानजीको चलते समय अपनी अंगूठी सीताजीको देनेके लिये दे दी, जिससे सीताजीको विश्वास हो जाय कि हनुमानजी श्रीरामके पाससे ही आये हैं। दूसरे सब वानरोंके दलोंको तो कोई पता नहीं लगा, परंतु दक्षिणकी ओर जानेवाले दलको जब प्यास लगी तो एक गुफामेंसे पानीके पक्षियोंको निकलते देखकर वे लोग गुफामें घुसे। वहाँ गुफामें आगे जानेपर एक तपस्विनी मिली। सब बातें सुनकर उस तपस्विनीने उन लोगोंसे नेत्र बंद करनेको

सुग्रीवके आदेशसे हनुमानजीने दूर-दूरके पर्वतों एवं वनोंमें रहनेवाले वानरोंको एकत्र किया। सब किष्किन्धा आये और सुग्रीव तथा लक्ष्मणजीके साथ श्रीरामजीके पास आये।

श्रीरामके आदेशसे सुग्रीवने वानरोंके चार दल बनाकर चारों दिशाओंमें सीताजीकी खोज करनेको भेज दिया। दक्षिणकी ओर श्रीअंगदजी, जाम्बवंत और हनुमानजी आदि गये। भगवान श्रीरामने हनुमानजीको चलते समय अपनी अंगूठी सीताजीको देनेके लिये दे दी, जिससे सीताजीको विश्वास हो जाय कि हनुमानजी श्रीरामके पाससे ही आये हैं। दूसरे सब वानरोंके दलोंको तो कोई पता नहीं लगा, परंतु दक्षिणकी ओर जानेवाले दलको जब प्यास लगी तो एक गुफामेंसे पानीके पक्षियोंको निकलते देखकर वे लोग गुफामें घुसे। वहाँ गुफामें आगे जानेपर एक तपस्विनी मिली। सब बातें सुनकर उस तपस्विनीने उन लोगोंसे नेत्र बंद करनेको

देवताओंने नागोंकी माता सुरसाको हनुमानजीकी शक्तिकी परीक्षाके लिये भेजा । सुरसाने जब हनुमानजीको खा जानेके लिये बहुत बड़ा मुख फैलाया, तब हनुमानजीने अपना रूप छोटा कर लिया और उसके मुखमें जाकर तुरंत बाहर निकल आये । सिंहिका नामकी एक राक्षसी समुद्रमें रहती थी । वह आकाशमें उड़नेवाले पक्षियोंकी छाया पकड़कर उन्हें खींच लेती और खा जाया करती थी । उसने हनुमानजीकी भी छाया पकड़ी, किंतु हनुमानजीने समुद्रमें कूदकर उसे मार डाला । वहाँसे वे लंकामें पहुँचे । रात्रिके समय बहुत छोटा रूप बनाकर उन्होंने लंकामें प्रवेश किया । लंका नगरकी रक्षा करनेवाली राक्षसीने पहले तो उन्हें रोका, पर जब उन्होंने एक घूसा मारकर व्याकुल कर दिया, उसने रास्ता छोड़ दिया ।

हनुमानजीने लंकाके सभी घर देख लिये परंतु उन्हें कहीं भी सीताजी नहीं मिलीं । अन्तमें

देवताओंने नागोंकी माता सुरसाको हनुमानजीकी शक्तिकी परीक्षाके लिये भेजा। सुरसाने जब हनुमानजीको खा जानेके लिये बहुत बड़ा मुख फैलाया, तब हनुमानजीने अपना रूप छोटा कर लिया और उसके मुखमें जाकर तुरंत बाहर निकल आये। सिंहिका नामकी एक राक्षसी समुद्रमें रहती थी। वह आकाशमें उड़नेवाले पक्षियोंकी छाया पकड़कर उन्हें खींच लेती और खा जाया करती थी। उसने हनुमानजीकी भी छाया पकड़ी, किंतु हनुमानजीने समुद्रमें कूदकर उसे मार डाला। वहाँसे वे लंकामें पहुँचे। रात्रिके समय बहुत छोटा रूप बनाकर उन्होंने लंकामें प्रवेश किया। लंका नगरकी रक्षा करनेवाली राक्षसीने पहले तो उन्हें रोका, पर जब उन्होंने एक घूसा मारकर व्याकुल कर दिया, उसने रास्ता छोड़ दिया।

हनुमानजीने लंकाके सभी घर देख लिये परंतु उन्हें कहीं भी सीताजी नहीं मिलीं। अन्तमें

द्वारा हनुमानजीको मूर्छित करके बाँध लिया और रावणकी राजसभामें ले गया ।

श्रीहनुमानजीने रावणको बहुत समझाया कि सीताजीको लौटाकर श्रीरामजीसे क्षमा माँगनेपर ही उसका कल्याण होगा । लेकिन रावण भला ऐसी शिक्षा कहाँ माननेवाला था । उसने पहले तो श्रीहनुमानको मार डालनेकी आज्ञा दी, किंतु विभीषणजीने समझाया, दूतको नहीं मारना चाहिये । राक्षसोंने रावणकी आज्ञासे हनुमानजीकी पूँछमें कपड़े लपेटकर तेल-घीसे भिगोया और उसमें अग्नि लगा दी । हनुमानजीने अपना रूप बहुत बड़ा कर लिया । अपनी जलती पूँछसे कूद-कूदकर वे राक्षसोंके घरोंको जलाने लगे । विभीषणके घरको छोड़कर उन्होंने सारी लंका फूँक दी ।

लंका जलाकर समुद्रमें पूँछ बुझाया, फिर हनुमानजी श्रीसीताजीके पास गये । सीताजीने उन्हें श्रीरामजीको देनेके लिये अपने सिरमें पहननेकी

द्वारा हनुमानजीको मूर्छित करके बाँध लिया और रावणकी राजसभामें ले गया ।

श्रीहनुमानजीने रावणको बहुत समझाया कि सीताजीको लौटाकर श्रीरामजीसे क्षमा माँगनेपर ही उसका कल्याण होगा । लेकिन रावण भला ऐसी शिक्षा कहाँ माननेवाला था । उसने पहले तो श्रीहनुमानको मार डालनेकी आज्ञा दी, किंतु विभीषणजीने समझाया, दूतको नहीं मारना चाहिये । राक्षसोंने रावणकी आज्ञासे हनुमानजीकी पूँछमें कपड़े लपेटकर तेल-घीसे भिगोया और उसमें अग्नि लगा दी । हनुमानजीने अपना रूप बहुत बड़ा कर लिया । अपनी जलती पूँछसे कूद-कूदकर वे राक्षसोंके घरोंको जलाने लगे । विभीषणके घरको छोड़कर उन्होंने सारी लंका फूँक दी ।

लंका जलाकर समुद्रमें पूँछ बुझाया, फिर हनुमानजी श्रीसीताजीके पास गये । सीताजीने उन्हें श्रीरामजीको देनेके लिये अपने सिरमें पहननेकी

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥

रामचंद्र गुन बरनैं लागा । सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥

कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥

जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघु रूप तुरंता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं । भईं सभीत निसाचर नारीं ॥
देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥
जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥
चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥

कपि करि हृदयँ बिचार दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
जनु असोक अंगार दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥

रामचंद्र गुन बरनैं लागा । सुनतहिं सीता कर दुख भागा ॥
मन संतोष सुनत कपि बानी । भगति प्रताप तेज बल सानी ॥
चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तोरैं लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥
सब रजनीचर कपि संघारे । गए पुकारत कछु अधमारे ॥

कपि कें ममता पूँछ पर सबहि कहउँ समुझाइ ।
तेल बोरि पट बाँधि पुनि पावक देहु लगाइ ॥

जातुधान सुनि रावन बचना । लागे रचैं मूढ़ सोइ रचना ॥
पावक जरत देखि हनुमंता । भयउ परम लघु रूप तुरंता ॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनक अटारीं । भईं सभीत निसाचर नारीं ॥
देह बिसाल परम हरुआई । मंदिर तें मंदिर चढ़ धाई ॥
जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक बिभीषन कर गृह नाहीं ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

पूँछ बुझाइ खोइ श्रम धरि लघु रूप बहोरि ।
जनकसुता कें आगें ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥

मातु मोहि दीजे कछु चीन्हा । जैसें रघुनायक मोहि दीन्हा ॥
चूड़ामनि उतारि तब दयऊ । हरष समेत पवनसुत लयऊ ॥
नाघि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलिकिला कपिन्ह सुनावा ॥
चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥

श्रीरामके पास आये। सुग्रीवजीने तो इस संदेहसे कि विभीषण रावणके भाई हैं और पीछे कुछ गड़बड़ी कर सकते हैं, उन्हें बाँधकर कैद कर लेनेकी बात कही, लेकिन श्रीराम तो शरणागतवत्सल हैं। उन्होंने विभीषणको निर्भय करके अपनी शरणमें ले लिया। उन्हें अपना निजी सहायक बना लिया और वहींपर उन्हें लंकाके राज्यका राजतिलक भी कर दिया।

श्रीरामने विभीषणकी सम्मतिसे तीन दिनतक उपवास करके समुद्रसे प्रार्थना की कि वह उनकी सेनाके लिये मार्ग दे दे। जब प्रार्थनासे कोई लाभ नहीं हुआ, तब श्रीरामने धनुषपर दिव्य बाण चढ़ाया। उस बाणके चढ़ाते ही बाणके तेजसे समुद्रका जल खौलने लगा। अन्तमें समुद्रके देवता डरकर मनुष्यके रूपमें प्रकट हुए। उन्होंने क्षमा माँगी और सेनाके पार होनेका उपाय बताया। श्रीरामकी सेनामें नल और नील बड़े चतुर शिल्पी थे। उन्हें बचपनमें ऋषियोंने शाप दिया था कि उनके फेंके पत्थर

श्रीरामके पास आये। सुग्रीवजीने तो इस संदेहसे कि विभीषण रावणके भाई हैं और पीछे कुछ गड़बड़ी कर सकते हैं, उन्हें बाँधकर कैद कर लेनेकी बात कही, लेकिन श्रीराम तो शरणागतवत्सल हैं। उन्होंने विभीषणको निर्भय करके अपनी शरणमें ले लिया। उन्हें अपना निजी सहायक बना लिया और वहींपर उन्हें लंकाके राज्यका राजतिलक भी कर दिया।

श्रीरामने विभीषणकी सम्मतिसे तीन दिनतक उपवास करके समुद्रसे प्रार्थना की कि वह उनकी सेनाके लिये मार्ग दे दे। जब प्रार्थनासे कोई लाभ नहीं हुआ, तब श्रीरामने धनुषपर दिव्य बाण चढ़ाया। उस बाणके चढ़ाते ही बाणके तेजसे समुद्रका जल खौलने लगा। अन्तमें समुद्रके देवता डरकर मनुष्यके रूपमें प्रकट हुए। उन्होंने क्षमा माँगी और सेनाके पार होनेका उपाय बताया। श्रीरामकी सेनामें नल और नील बड़े चतुर शिल्पी थे। उन्हें बचपनमें ऋषियोंने शाप दिया था कि उनके फेंके पत्थर

नामक जड़ीके द्वारा लक्ष्मणजीको स्वस्थ कर दिया। अन्तमें मेघनाद लक्ष्मणजीके हाथों मारा गया। रावणका एक भाई कुम्भकर्ण छः महीने सोता तथा एक दिन जागता था। वह इतना भारी शरीरका था कि पर्वतके समान जान पड़ता था। रावणने किसी प्रकार उसे जगाया और युद्ध करनेको भेजा। श्रीरामने अपने बाणोंसे कुम्भकर्णका सिर युद्धमें काट दिया और उसके शरीरके भी टुकड़े-टुकड़े कर दिये। सबसे पीछे रावण युद्ध करने आया। राम और रावणका बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। राम-रावणका युद्ध बारह दिन हुआ था। बारहवें दिन श्रीरामके बाणोंसे रावण भी मारा गया।

मर जानेपर शत्रुके प्रति भी सत्पुरुष दयाका ही बर्ताव करते हैं। श्रीरामने विभीषणको आज्ञा दी कि जाकर रावणका अन्तिम संस्कार करो। इसके पश्चात् लक्ष्मणजीने नगरमें जाकर विभीषणका राज्यतिलक किया। श्रीरामके आदेशसे विभीषण बड़े

नामक जड़ीके द्वारा लक्ष्मणजीको स्वस्थ कर दिया। अन्तमें मेघनाद लक्ष्मणजीके हाथों मारा गया। रावणका एक भाई कुम्भकर्ण छः महीने सोता तथा एक दिन जागता था। वह इतना भारी शरीरका था कि पर्वतके समान जान पड़ता था। रावणने किसी प्रकार उसे जगाया और युद्ध करनेको भेजा। श्रीरामने अपने बाणोंसे कुम्भकर्णका सिर युद्धमें काट दिया और उसके शरीरके भी टुकड़े-टुकड़े कर दिये। सबसे पीछे रावण युद्ध करने आया। राम और रावणका बड़ा भयंकर युद्ध हुआ। राम-रावणका युद्ध बारह दिन हुआ था। बारहवें दिन श्रीरामके बाणोंसे रावण भी मारा गया।

मर जानेपर शत्रुके प्रति भी सत्पुरुष दयाका ही बर्ताव करते हैं। श्रीरामने विभीषणको आज्ञा दी कि जाकर रावणका अन्तिम संस्कार करो। इसके पश्चात् लक्ष्मणजीने नगरमें जाकर विभीषणका राज्यतिलक किया। श्रीरामके आदेशसे विभीषण बड़े

नुसार चलता था और इतना बड़ा था कि उसमें लाखों व्यक्ति बैठ सकते थे। सुग्रीव, अंगद, हनुमान, जाम्बवंत, विभीषण आदि सेनाके मुख्य-मुख्य लोगोंके साथ श्रीराम सीताजी तथा लक्ष्मणजीके साथ उस पुष्पक विमानमें बैठे। वानरी सेनाको उन्होंने बड़े प्रेमसे अपने-अपने स्थानपर जानेके लिये विदा कर दिया था। वह विमान लंकासे अयोध्याको चल पड़ा।

तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा॥
चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा॥

एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपि लंका॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा॥
बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कही बिभीषन नीति बखानी॥
सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा॥
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा। भयउ बिभव बिनु तबहिं अभागा॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं॥
बाँधा सेतु नील नल नागर। राम कृपाँ जसु भयउ उजागर॥

नुसार चलता था और इतना बड़ा था कि उसमें लाखों व्यक्ति बैठ सकते थे। सुग्रीव, अंगद, हनुमान, जाम्बवंत, विभीषण आदि सेनाके मुख्य-मुख्य लोगोंके साथ श्रीराम सीताजी तथा लक्ष्मणजीके साथ उस पुष्पक विमानमें बैठे। वानरी सेनाको उन्होंने बड़े प्रेमसे अपने-अपने स्थानपर जानेके लिये विदा कर दिया था। वह विमान लंकासे अयोध्याको चल पड़ा।

तब रघुपति कपिपतिहि बोलावा। कहा चलैं कर करहु बनावा॥
चला कटकु को बरनैं पारा। गर्जहिं बानर भालु अपारा॥

एहि बिधि जाइ कृपानिधि उतरे सागर तीर।
जहँ तहँ लागे खान फल भालु बिपुल कपि बीर॥

उहाँ निसाचर रहहिं ससंका। जब तें जारि गयउ कपि लंका॥
अवसर जानि बिभीषनु आवा। भ्राता चरन सीसु तेहिं नावा॥
बुध पुरान श्रुति संमत बानी। कही बिभीषन नीति बखानी॥
सुनत दसानन उठा रिसाई। खल तोहि निकट मृत्यु अब आई॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा। अनुज गहे पद बारहिं बारा॥
रावन जबहिं बिभीषन त्यागा। भयउ विभव बिनु तबहिं अभागा॥
चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं। करत मनोरथ बहु मन माहीं॥
बाँधा सेतु नील नल नागर। राम कृपाँ जसु भयउ उजागर॥

राम-राज्य

श्रीभरतजी अयोध्यामें एक-एक दिन गिन रहे थे ।उन्होंने दूर-दूरतक समाचार देनेके लिये दूत नियुक्त कर रखे थे । जब केवल एक दिन श्रीरामके वनवासके चौदह वर्ष पूर्ण होनेको रह गया, तब भरतजीको बड़ी व्याकुलता हुई । लेकिन श्रीरामने हनुमानजीको आगे भेज दिया था । हनुमानजीने भरतजीको श्रीरामके आनेका समाचार दिया । सम्पूर्ण अयोध्यामें आनन्दका समुद्र मानो उमड़

राम-राज्य

श्रीभरतजी अयोध्यामें एक-एक दिन गिन रहे थे । उन्होंने दूर-दूरतक समाचार देनेके लिये दूत नियुक्त कर रखे थे । जब केवल एक दिन श्रीराम-के वनवासके चौदह वर्ष पूर्ण होनेको रह गया, तब भरतजीको बड़ी व्याकुलता हुई । लेकिन श्रीरामने हनुमानजीको आगे भेज दिया था । हनुमानजीने भरतजीको श्रीरामके आनेका समाचार दिया । सम्पूर्ण अयोध्यामें आनन्दका समुद्र मानो उमड़

रा० भाग २] रामजीका राजतिलक हो रहा है [पृष्ठ ४१

रामजीका राजतिलक हो रहा है

उत्तम था कि अबतक सब लोग उसका स्मरण करते हैं।

राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत॥
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत। सीता सहित अनुज प्रभु आवत॥
सुनत वचन बिसरे सब दूखा। तृषावंत जिमि पाइ पियूषा॥
हरषित गुर परिजन अनुज भूसुर बृंद समेत।
चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपानिकेत॥
आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान॥
रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥
प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥
राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥
राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥

उत्तम था कि अबतक सब लोग उसका स्मरण करते हैं।

राम बिरह सागर महँ भरत मगन मन होत।
बिप्र रूप धरि पवनसुत आइ गयउ जनु पोत॥
रिपु रन जीति सुजस सुर गावत। सीता सहित अनुज प्रभु आवत॥
सुनत वचन बिसरे सब दूखा। तृषावंत जिमि पाइ पियूषा॥
हरषित गुर परिजन अनुज भूसुर बृंद समेत।
चले भरत मन प्रेम अति सन्मुख कृपानिकेत॥
आवत देखि लोग सब कृपासिंधु भगवान।
नगर निकट प्रभु प्रेरेउ उतरेउ भूमि बिमान॥
रबि सम तेज सो बरनि न जाई। बैठे राम द्विजन्ह सिरु नाई॥
प्रथम तिलक बसिष्ट मुनि कीन्हा। पुनि सब बिप्रन्ह आयसु दीन्हा॥
राम राज बैठें त्रैलोका। हरषित भए गए सब सोका॥
बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप बिषमता खोई॥
सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुंदर सब बिरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छनहीना॥
दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा॥
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट सयानी॥
राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा॥

छोड़ने न लगें यह सोचकर श्रीरामने लक्ष्मणजीको कहा कि 'तुम सीताको वनमें छोड़ आओ' इच्छा न होनेपर भी बड़े भाईकी आज्ञासे लक्ष्मणजी सीताजीको रथमें बैठाकर ले गये और वनमें छोड़ आये। इससे सीताजीको तो अपार दुःख हुआ ही, श्रीरामको भी बहुत दुःख हुआ। लेकिन प्रजा धर्ममें संदेह करके धर्मसे च्युत न हो, इसके लिये उन्हें यह बड़ा भारी त्याग करना पड़ा। सीताजीको महर्षि वाल्मीकिने देखा। वे उन्हें अपने आश्रममें ले गये। वहाँ सीताजी ऋषिकी पुत्रीकी भाँति रहने लगीं। वे जब वनमें छोड़ी गयीं तो गर्भवती थीं। वहाँ उन्हें कुश और लव नामक दो जुड़वे पुत्र हुए।

श्रीरामने जब अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ किया तो लव-कुशने अश्वमेधका घोड़ा पकड़ लिया। घोड़ेकी रक्षा शत्रुघ्नजी तथा बहुत-से सैनिक कर रहे थे। युद्धमें लव-कुशने शत्रुघ्नजी तथा

छोड़ने न लगें यह सोचकर श्रीरामने लक्ष्मणजीको कहा कि 'तुम सीताको वनमें छोड़ आओ' इच्छा न होनेपर भी बड़े भाईकी आज्ञासे लक्ष्मणजी सीताजीको रथमें बैठाकर ले गये और वनमें छोड़ आये। इससे सीताजीको तो अपार दुःख हुआ ही, श्रीरामको भी बहुत दुःख हुआ। लेकिन प्रजा धर्ममें संदेह करके धर्मसे च्युत न हो, इसके लिये उन्हें यह बड़ा भारी त्याग करना पड़ा। सीताजीको महर्षि वाल्मीकिने देखा। वे उन्हें अपने आश्रममें ले गये। वहाँ सीताजी ऋषिकी पुत्रीकी भाँति रहने लगीं। वे जब वनमें छोड़ी गयीं तो गर्भवती थीं। वहाँ उन्हें कुश और लव नामक दो जुड़वे पुत्र हुए।

श्रीरामने जब अश्वमेध यज्ञ प्रारम्भ किया तो लव-कुशने अश्वमेधका घोड़ा पकड़ लिया। घोड़ेकी रक्षा शत्रुघ्नजी तथा बहुत-से सैनिक कर रहे थे। युद्धमें लव-कुशने शत्रुघ्नजी तथा

रा० भाग २] रामदरबारमें लव-कुश रामायण गा रहे हैं [पृष्ठ ४७

रा० भाग २] रामदरबारमें लव-कुश रामायण गा रहे हैं [पृष्ठ ४७

श्रीरामचन्द्रने मर्यादाकी रक्षाके लिये यह आदर्श सबके सामने रखा ।

इस घटनाके कुछ दिनों बाद एक दिन स्वयं काल देवता मुनिके वेशमें श्रीरामके पास यह कहने आये कि भगवानके अपने दिव्यलोक जानेका समय हो गया है । भगवान श्रीरामने कालसे एकान्तमें बात करनेके लिये लक्ष्मणजीको पहरेपर खड़ा कर दिया और कह दिया कि 'इस समय मेरे पास जो आवेगा, उसे मैं प्राणदंड दूँगा ।' लेकिन उसी समय दुर्वासा मुनि पहुँचे । उन्होंने लक्ष्मणजीको श्रीरामके पास तुरंत जाकर अपने आनेकी सूचना देनेको कहा । दुर्वासाजी बड़े क्रोधी हैं । उनकी बात न माननेसे वे शाप दे देते । इससे लक्ष्मणजीने जाकर भगवानको सूचना दी । भगवान श्रीरामने आकर दुर्वासाजीका स्वागत-सत्कार किया । भगवान श्रीराम अपने वचनको झूठा नहीं होने देना चाहते थे और लक्ष्मणजीको प्राणदंड भी नहीं दे सकते थे । अपने

श्रीरामचन्द्रने मर्यादाकी रक्षाके लिये यह आदर्श सबके सामने रखा ।

इस घटनाके कुछ दिनों बाद एक दिन स्वयं काल देवता मुनिके वेशमें श्रीरामके पास यह कहने आये कि भगवान्‌के अपने दिव्यलोक जानेका समय हो गया है । भगवान श्रीरामने कालसे एकान्तमें बात करनेके लिये लक्ष्मणजीको पहरेपर खड़ा कर दिया और कह दिया कि 'इस समय मेरे पास जो आवेगा, उसे मैं प्राणदंड दूँगा ।' लेकिन उसी समय दुर्वासा मुनि पहुँचे । उन्होंने लक्ष्मणजीको श्रीरामके पास तुरंत जाकर अपने आनेकी सूचना देनेको कहा । दुर्वासाजी बड़े क्रोधी हैं । उनकी बात न माननेसे वे शाप दे देते । इससे लक्ष्मणजीने जाकर भगवानको सूचना दी । भगवान श्रीरामने आकर दुर्वासाजीका स्वागत-सत्कार किया । भगवान श्रीराम अपने वचनको झूठा नहीं होने देना चाहते थे और लक्ष्मणजीको प्राणदंड भी नहीं दे सकते थे । अपने